प्रतिवेदन

डॉ. अम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र (DAIC) द्वारा 30 जून, 2026 को कबीर प्रकट दिवस के अवसर पर "संत कबीर एवं भारतीय ज्ञान परंपरा" विषय पर एक राष्ट्रीय व्याख्यान का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य संत कबीर के समतामूलक, मानवीय एवं तार्किक चिंतन को भारतीय ज्ञान परंपरा के व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझना तथा उनके विचारों की समकालीन सामाजिक एवं संवैधानिक संदर्भों में प्रासंगिकता पर विचार-विमर्श करना था। इस आयोजन ने संत कबीर के सामाजिक समरसता, समानता, बंधुत्व, मानव गरिमा तथा रूढ़ियों के विरोध के संदेश को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि **श्री किशोर मकवाना**, माननीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग(NCSC) थे। कार्यक्रम में **प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल,** प्रख्यात लेखक एवं इतिहासकार, **श्री कुलदीप रत्नू**, लेखक एवं नीति विशेषज्ञ तथा **प्रो.राजेश पासवान** ने अपने व्याख्यानों के माध्यम से संत कबीर के दर्शन, भारतीय ज्ञान परंपरा, सामाजिक समरसता तथा समकालीन भारत में उनके विचारों की प्रासंगिकता पर विस्तृत एवं विचारोत्तेजक विमर्श प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन **कर्नल आकाश पाटील**, निदेशक, डॉ. अम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र द्वारा किया गया। उन्होंने विषय की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हुए संत कबीर के विचारों को डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक न्याय एवं संवैधानिक आदर्शों से जोड़ते हुए उनकी वर्तमान समय में उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल ने बताया कि संत कबीर का मानना था कि सत्य केवल शास्त्रों में वर्णित होने के कारण स्वीकार करने योग्य नहीं है, बल्कि उसे स्वानुभव (अनुभव) और विवेक के आधार पर आत्मसात एवं सत्यापित किया जाना चाहिए। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि सत्य तक पहुँचने की प्रक्रिया (ज्ञान मीमांसा) स्वयं सत्य जितनी ही महत्वपूर्ण है। भारतीय दर्शन में प्रमाण

मीमांसा (ज्ञान के प्रमाणिक स्रोतों का अध्ययन) का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि यही सत्य एवं ज्ञान की प्रामाणिकता का आधार निर्धारित करती है। उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा को देशभाषाओं (लोकभाषाओं) के अध्ययन के बिना पूर्णतः नहीं समझा जा सकता। ज्ञान केवल संस्कृत तक सीमित नहीं है, बल्कि संत कबीर जैसे महापुरुषों ने लोकभाषा के माध्यम से अत्यंत गहन दार्शनिक एवं मानवीय विचारों को जन-जन तक पहुँचाया। उन्होंने संत कबीर के चिंतन के पाँच प्रमुख आधारों का उल्लेख किया—अनुभव, विवेक, अनभय, राम, प्रेम।

श्री कुलदीप रत्नू ने अपने वक्तव्य में कहा संत कबीर का मानना था कि बाह्य जगत और आंतरिक आध्यात्मिक जगत दोनों की सम्यक् समझ आवश्यक है। जीवन के समग्र सत्य को समझने के लिए इन दोनों आयामों का संतुलित अध्ययन एवं अनुभव अनिवार्य है। उनके अनुसार सच्चा ज्ञान तीन प्रमुख आधारों से प्राप्त होता है—शास्त्रों का अध्ययन, सांसारिक जीवन का अनुभव, तथा आंतरिक आध्यात्मिक साधना।

संत कबीर ने केवल शास्त्रीय शिक्षाओं का अनुकरण नहीं किया, बल्कि उनका ज्ञान प्रत्यक्ष अनुभव, ध्यान, आत्मबोध और आंतरिक साधना से विकसित हुआ। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि आध्यात्मिक साधना के लिए संसार का त्याग आवश्यक नहीं है। व्यक्ति अपने पारिवारिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए भी आत्मचिंतन और ईश्वर-साक्षात्कार की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

श्री किशोर मकवाना जी ने अपने व्याख्यान के दौरान भारत रत्न डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर के जीवन-दर्शन का उल्लेख करते हुए कहा कि डॉ. अम्बेडकर ने व्यक्ति और समाज के उत्थान के लिए तीन मूल आदर्शों—ज्ञान, आत्मसम्मान और चरित्र—पर विशेष बल दिया। उनके अनुसार ज्ञान व्यक्ति को विवेक और सही निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करता है, आत्मसम्मान उसे अन्याय और भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष करने का साहस देता है तथा चरित्र उसके व्यक्तित्व और सामाजिक उत्तरदायित्व की वास्तविक पहचान है। उन्होंने आगे कहा कि इन तीनों मूल्यों के बिना न तो व्यक्ति का सर्वांगीण

विकास संभव है और न ही एक न्यायपूर्ण एवं समतामूलक समाज का निर्माण किया जा सकता है।

उन्होंने आगे कहा कि संत कबीर और डॉ. अम्बेडकर, दोनों के चिंतन का मूल उद्देश्य मानव गरिमा, समानता और आत्मबोध की स्थापना था। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि ईश्वर प्रत्येक मनुष्य के भीतर विद्यमान है तथा मानव शरीर स्वयं एक मंदिर के समान है। अतः बाहरी आडंबरों और कर्मकांडों की अपेक्षा व्यक्ति को अपने अंतर्मन की शुद्धता, नैतिक आचरण, आत्मचिंतन और मानव सेवा पर अधिक ध्यान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि जब मनुष्य अपने भीतर निहित दिव्य चेतना को पहचानता है, तभी वह सच्चे अर्थों में आध्यात्मिक उन्नति और सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन कर सकता है।

कार्यक्रम के अंत में **डॉ. संजय पासवान**, पूर्व केंद्रीय मंत्री, द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। उन्होंने मुख्य अतिथि, सभी वक्ताओं, आमंत्रित अतिथियों, प्रतिभागियों तथा आयोजन में सहयोग देने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त किया और इस प्रकार के बौद्धिक विमर्शों की निरंतरता पर बल दिया। इस कार्यक्रम में विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं शैक्षणिक संस्थानों के शिक्षकों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों, नीति विशेषज्ञों, बुद्धिजीवियों तथा बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। समग्र रूप से यह कार्यक्रम अत्यंत सफल एवं सार्थक रहा तथा संत कबीर के शाश्वत संदेश–समानता, करुणा, बंधुत्व, सामाजिक समरसता एवं मानव गरिमा को व्यापक रूप से प्रसारित करने के साथ-साथ भारतीय ज्ञान परंपरा और संवैधानिक मूल्यों के मध्य अंतर्संबंधों को रेखांकित करने में सफल रहा।

DR. AMBEDKAR
INTERNATIONAL CENTRE
organises
TALK
on
"Sant Kabir
&
Indian Knowledge Syste
on occasion of
Kabir Prakat Diwa
Dr. Ambedkar International Centre
Talk
on
"Sant Kabir & Indian Knowledge System"
Kabir Prakat Diwas
DAIC
30th June , 2026
4:00 PM onwards
Samrasta Hall, Dr. Ambedkar
International Centre (DAIC)
15, Janpath, New Delhi, 110001

EXIT
Students